IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन |

डॉ श्याम मनोहर गौतम

(पर्यवेक्षक)

(कोटा विश्वविद्यालय, कोटा) राजस्थान

shyamgautam3711@gmail.com

आरती कुमारी गौतम

शोधार्थी

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

राजस्थान

प्रस्तावना -पारिवारिक वातावरण- पारिवारिक वातावरण से तात्पर्य परिवार के सभी सदस्यों द्वारा बालक के साथ होने वाली क्रियाओं -प्रतिक्रियाओं से है। बालक एक परिवार में जन्म लेता है , जन्म के समय वह एक कोरी स्लेट होता है तथा जन्म लेने के बाद से ही वह कुछ न कुछ सीखना प्रारंभ कर देता है। बालक सर्वप्रथम अपनी सहज क्रिया एवं उत्तेजनाओं से सीखता है। जन्म के समय नवजात शिशु की प्रमुख उत्तेजनाएँ रोने, चूसने, पकड़ने, और जकड़ने की क्रियाएँ हैं, जो साँस लेने, भोजन करने, और माता-पिता एवं परिवार से जुड़ने में मदद करती हैं। शिशु माँ की खुशबू को भी पहचानता है और वातावरण के प्रति विभिन्न उत्तेजनाओं से प्रतिक्रिया देता है, जैसे तापमान में बदलाव होने पर गर्मी लगे तो रोता है ठंड लगे तो रोता है, सिकुड़ने लगता छींकने लगता है । शिशु अपनी माँ की गंध को पहचानता है। परिवार के व्यक्तियों के स्पर्श को पहचानने लगता है तथा स्पर्श करने पर पकड़ने का प्रयास करता है । कुछ समय बाद शिशु परिवार के व्यक्तियों की आवाज को पहचाने लगता है और उनके प्रति निरर्थक ध्वनियाँ निकालकर प्रतिक्रिया करने का प्रयास करता है, जैसे कि रोना! अगर उसको पैदा होने के बाद भूख लगती है तो वह रोने लग जाता है । जब उसको पता चलता है कि रोने के बाद मुझे दूध मिलता है तो वह वही आदत दोहराने लगता है। जब-जब उसको भूख लगती है तब, वह रोने लगता है, जब-जब वह गीला कर देता है तो वह फिर से रोने लगता है, क्योंकि वह यह सीखने लग जाता है कि मेरे रोने से मुझ पर ध्यान दिया जाएगा।

बालक जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है वैसे-वैसे दिन प्रतिदिन कुछ ना कुछ नया सीखता जाता है। वह सीखने में परिवार के प्रत्येक सदस्य की मदद लेता है । परिवार के प्रत्येक सदस्य का अनुकरण करने एवं नकल करने का प्रयास करता है । परिवार के सदस्य जिस प्रकार की क्रियाएएँ करते हैं बालक उन्हीं क्रियाओं को बार-बार दोहराने लगता है। यदि बालक को नकारात्मक क्रियाएँ देखने को मिलती है पर वह नकारात्मक क्रियाओं का दोहरान करता है और अगर उसको सकारात्मक क्रियाएँ देखने को मिलती है तो वह सकारात्मक क्रियाओं को दोहराने का प्रयास करता है।

बालक के सर्वांगीण विकास में परिवार का महत्वपूर्ण योगदान रहता है । बालक का मानसिक विकास पारिवारिक वातावरण से अत्यधिक प्रभावित होता है । एक बालक के मानसिक स्वास्थ्य के लिए परिवार के सभी व्यक्तियों का व्यक्तित्व जिम्मेदार होता है । अपने भारत में एक लोकोक्ति प्रचलित है कि जैसा खाओगे अन्न वैसा बनेगा मन अर्थात जैसे वातावरण में बालक की परवरिश की जाती है, बालक की मानसिक धारणा भी वैसी ही बनती चली जाती है, और उसी धारणा के अनुसार वह आगे अपने रीति-रिवाज व्यवहार संस्कार आदि को प्रचलित रखता है ।

विश्वास और भावनात्मक समर्थन से युक्त सुरक्षित वातावरण सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। सुरक्षित एवं सम्मानित पारिवारिक वातावरण बालकों में आत्मविश्वास आत्मसम्मान को बढ़ाता है तो वही नकारात्मक व्यवहार बालकों में विवेक चिंता अंधविश्वास एवं मानसिक विकारों को जन्म देता है। परिवार का अत्यधिक तनावपूर्ण , असंतुलित, संघर्षमयी या अस्वस्थ वातावरण मानसिक विकारों को उत्पन्न करता है एवं उनको बढ़ावा देता है।

समस्या का औचित्य -कोई भी शोध कार्य समस्या के औचित्य के बिना आगे बढ़ाना तथा उसे दिशा प्रदान करना अत्यंत कठिन कार्य होता है । जब शोधार्थी ने नागपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अवलोकन किया तो देखने में आया कि इस क्षेत्र का वातावरण काफी दोष पूर्ण एवं रूढ़िवादी धारणाओं से घिरा हुआ है तथा परिवार के सदस्यों में लिंगभेद के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण हैं, जिसके कारण विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य कुप्रभावित हो रहा है । अतः शोधार्थी ने नागपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण को जानने और पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभाव को देखने के लिए इस विषय को शोध के लिए चुना हैं।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण-

ग्रामीण क्षेत्र- जनसंख्या निवास का वह भौगोलिक क्षेत्र जो कि शहर एवं कस्बों से दूर स्थित होता है । वह क्षेत्र जो नगरों,शहरों व कस्बों के समान भौतिक सुख सुविधाओं व रोजगार के पर्याप्त संसाधनों से वंचित है, उसको ग्रामीण क्षेत्र कहा जाता है।

उच्च माध्यमिक स्तर- शिक्षा को प्राथमिक ,माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक तीन स्तरों में विभाजित किया जिसमें उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य है 11 वीं एवं 12वीं कक्षा में दी जाने वाली धार्मिक व्यावसायिक शिक्षा है ।

विद्यार्थी- 'विद्या चाहने वाला' अर्थात ऐसा मानव आयु वर्ग जो विद्यालय में शिक्षकों के निर्देशन में विद्या अध्ययन कर कुछ सीखता है ।

पारिवारिक वातावरण -पारिवारिक वातावरण से तात्पर्य है परिवार के व्यक्तियों द्वारा बनाया गया रहन-सहन का परिवेश जिसमें किसी बालक की रूचियों, आदतों, दृष्टिकोणों एवं धारणाओं आदि का विकास होता है।

मानसिक स्वास्थ्य- किसी व्यक्ति की वह मानसिक स्थिति जिसके अनुसार वह सोचता है, समझता है , किसी कार्य को करने की क्षमता रखता है, भावनात्मक , क्रियात्मक एवं संवेगात्मक क्रियाओं का प्रदर्शन करता है ।

संबंधित साहित्य का अध्ययन -किसी भी शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए उससे पूर्व तथा समस्या के चुनाव के लिए उस समस्या से संबंधित विभिन्न साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं आदि का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक होता है।सबंधित साहित्य का अध्ययन करने से शोध करने की दिशा प्रदान होती है परिकल्पना निर्माण करने का अनुभव प्राप्त होता है एवं शोध के उद्देश्य का निर्माण होता है।

1 प्राची दीक्षित(2020),किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं योग के प्रति अभिव्यक्ति पर योगाभ्यास के प्रभाव का अध्ययन ।

उद्देश्य -

1 सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर योगाभ्यास द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन ।

2 निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर योगाभ्यास द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

निष्कर्ष - अध्ययन के उपरांत निष्कर्ष निकला कि निजी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्रा दोनों ही योग को जीवन को अनुशासित करने का साधन मानते हैं । जीवन की कार्यकुशलता व सफलता के निर्धारण में मानसिक स्वास्थ्य की भूमिका होती है तथा सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है।

2 रविशंकर महावर (2020),मानसिक स्वास्थ्य के सामाजिक पहलू उदयपुर संभाग के मनोरोगियों के विशेष संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।

उद्देश्य-
1 मानसिक स्वास्थ्य को प्राप्त करने के लिए स्वास्थ्य के अन्य पहलुओं का अध्ययन करना।
2 मनोरोगियों में मानसिक बीमारी संबंधी परम्परागत मान्यताओं का अध्ययन करना तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के प्रति विचारों की जांच करना।
निष्कर्ष- उपर्युक्त शोध में निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि एक व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य के सामाजिक पहलुओं में उसका उच्च शैक्षणिक स्तर, आय, रोजगार वैवाहिक जीवन, पारिवारिक वातावरण, मनोरंजन के साधन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
3 शालिनी गुप्ता (2019),किशोरावस्था के बालकों पर मस्तिष्कीय अनुशासन, योगाभ्यास एवं मानसिक स्वास्थ्य का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
उद्देश्य-
1. किशोरावस्था के विद्यार्थियों के मस्तिष्कीय अनुशासन का अध्ययन करना।
2. किशोरावस्था के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
निष्कर्ष - प्रस्तुत शोध अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि योगाभ्यास के द्वारा किशोर विद्यार्थी मानसिक रूप से स्वस्थ एवं व्यवहार कुशल पाए गए तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च पायी गयी।
4 डॉ. देवकीनन्दन शर्मा(2018),पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बंध का अध्ययन ।
उद्देश्य-
1 बालक के व्यक्तित्व निर्माण में परिवार की भूमिका का अध्ययन करना।
2 पारिवारिक वातावरण द्वारा बालक की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना
निष्कर्ष- प्रस्तुत शोध में निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि परिवार का वातावरण, परिवार के व्यक्तियों का विद्यार्थियों के प्रति उसके व्यवहार एवं शैक्षिक विकास को प्रभावित करता है।
5 अंजू गुप्ता(2018),A Comparative Study of Environmental Awareness in Rural and Urban Pupil-Teachers through Social sites and Traditional Methods.
Objects -
1.To study the post onvisonmental awareness in pupil-teachers taught through social sites and traditional methods.
2.To study the post environmental awareness in high and low socioeconomic statas pupil-teachers taught through social sites and traditional methods.
Conclusions - Post environmental awareness is found high comparative of pre environment awareness. High SES, low SES, urban rural pupil teachers environmental awareness is high by social sites comparision to traditional method but in case of rural pupil-teachers low SES pupil teachers are more aware by traditional method comparative to social sites. So we can't solely depend upon the social sites for developing environmental awareness. It can prove a helping hand to traditional method
Effort should be done for better achievements of environmental awareness. It can be done by provide internet

शोध के उद्देश्य-
1 लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
2 लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
3 लिंगभेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना -
1 लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2 लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3 लिंगभेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श- प्रस्तुत- शोध कार्य में शोधार्थी ने नागपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के 300 विद्यार्थियों का चयन किया है, जिसमें से 150 छात्र हैं एवं 150 छात्राएँ हैं।

शोध विधि- किसी भी शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए एक शोध विधि का उपयोग किया जाता है प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है |

शोध के उपकरण- शोधार्थी ने पारिवारिक वातावरण के मापन हेतु डॉ. बीना शाह द्वारा निर्मित पारिवारिक परिवेश मापनी और मानसिक स्वास्थ्य के मापन हेतु डॉ. अरुण कुमार एवं अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण मानसिक स्वास्थ्य मापनी का उपयोग किया गया है ।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी- शोधार्थी द्वारा शोध कार्य में प्राप्त किए गए डाटा से निष्कर्ष निकालने हेतु मध्यमान ,मानक विचलन एवं टी परीक्षण शोध सांख्यिकी विधियों का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण -

1 लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या 4.1

लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों में सार्थकता का अंतर-

क्र. स.	चर	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप-विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का पारिवारिक वातावरण	150	76.20	13.20	2.04	0.05 पर अस्वीकृत
2.	ग्रामीण क्षेत्र की उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं का पारिवारिक वातावरण	150	71.97	21.59		

df=N1+N2-2=150+150-2=298

df=298 पर 0.01 का मान=2.59

df=298 पर 0.05 का मान=1.97

विश्लेषण- उपर्युक्त सारणी संख्या 4.1 के अनुसार लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं के पारिवारिक वातावरण के मध्यमान क्रमशः 76.20 व 71.97 तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 13.20 व 21.59 प्राप्त हुए है। इनसे प्राप्त 'टी का मान 2.04 है. जो स्वतंत्रता के अंश (df) 298, के लिए सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीयन मान 1.97 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना लिंगभेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त परिकल्पना के निष्कर्ष से स्पष्ट होता है के लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के छात्र- छात्राओं के पारिवारिक वातावरण में भिन्नता होती है।

2 लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं है

सारणी संख्या 4.2

लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों में सार्थकता का अंतर-

क्र. स.	चर	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप-विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य	150	73.90	13.70	6.10	0.05 पर अस्वीकृत
2.	ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य	150	63.10	16.82		

df=N1+N2-2=150+150-2=298

df=298 पर 0.01 का मान=2.59

df=298 पर 0.05 का मान=1.97

विश्लेषण- उपर्युक्त सारणी संख्या 4.2 के अनुसार लिंगभेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान क्रमशः 73.90 व 63.10 तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 13.70 व 16.82 प्राप्त हुए है। इनसे प्राप्त 'टी का मान 6.10 है. जो स्वतंत्रता के अंश (df) 298, के लिए सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीयन मान 1.97 से बहुत अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त परिकल्पना के निष्कर्ष से स्पष्ट होता है कि लिंगभेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के मध्यमान छात्राओं के मध्यमान से अधिक है । इसीलिए छात्राओं की तुलना में छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होता है। अतः ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग भेद के आधार पर मानसिक स्वास्थ्य में भिन्नता होती है।

3 लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

सारणी संख्या 4.3

लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य प्रोडक्ट मॉमेन्ट सहसंबंध गुणांक का मान-

चर	चर	सहसंबंध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
01	02		0.05 पर अस्वीकृत
पारिवारिक वातावरण	मानसिक स्वास्थ्य	0.151	

df=N-2=300-2=298

df=298 पर 0.01 का मान=0.181

df=298 पर 0.05 का मान=0.138

विश्लेषण- उपर्युक्त सारणी संख्या 4.3 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.151 प्राप्त हुआ है, जो कि df 298, के सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीयन मान 0.138 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है, को अस्वीकृत किया जाता है । इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण अच्छा हो उन विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा होगा यह आवश्यक है। परिणामतः हम कह सकते है कि ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

शोध के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष-

परिकल्पना 1- लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उपर्युक्त परिकल्पना से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की अपेक्षा छात्राओं के अनुकूल पारिवारिक वातावरण में कमी पायी गई हैं।

परिकल्पना 2- लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
उपर्युक्त परिकल्पना के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष से स्पष्ट होता है कि लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की अपेक्षा छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कमी पायी गई हैं।
परिकल्पना 3- लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

उपर्युक्त परिकल्पना के निष्कर्ष से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण अच्छा होता है उनका मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा होता है। अतः विद्यार्थियों के मानसिक विकास के लिए उनका पारिवारिक वातावरण अच्छा होना अत्यंत आवश्यक है।

शैक्षिक निहितार्थ -प्रस्तुति शोध कार्य में विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं उनके मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया। विद्यार्थियों के अच्छे मानसिक विकास के लिए उनका पारिवारिक वातावरण का अच्छा होना अत्यंत आवश्यक है, जितना अनुकूल पारिवारिक वातावरण होगा विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य उतना ही अच्छा होगा।

भावी शोध हेतु सुझाव-

1 प्रस्तुत शोध कार्य केवल महाराष्ट्र राज्य के नागपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर किया गया है । यह शोध कार्य राज्य के अन्य जिलों के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
2 यह शोध कार्य भारत के अन्य राज्यों के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है ।
3 प्रस्तुत शोध कार्य केवल उच्च माध्यमिक के स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों तक सीमित है यह शोध कार्य शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है ।
4 यह शोध कार्य महाविद्यालय के विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है

शोध सार

बालक अपने संवेगात्मक,भावनात्मक विकास, को परिवार में रहने वाले व्यक्तियों के अनुसार अनुकरण करना प्रारंभ करता है तथा वह धीरे-धीरे परिवार के अन्य सदस्यों की भांति मानसिक विकास को विकसित करता है। नागपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर किये शोध के निष्कर्ष में पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के परिवार के सदस्यों में लिंग भेद के आधार पर भेदभाव पाया गया अर्थात ग्रामीण क्षेत्र के लोग अपने बच्चों में लड़की तथा लड़के में भेदभाव रखते हैं, तथा वह उनको विभिन्न प्रकार की सुविधा प्रदान करने में भी भिन्नता दर्शाते हैं । इस शोध के आधार पर ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में अध्यनरत विद्यार्थियों में लिंग भेद के आधार पर मानसिक

भिन्नता भी पाई जाती है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का प्रभाव उनके मानसिक स्वास्थ्य पर दिखाई पड़ता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. शर्मा, कैलाश नाथ, 1958 "भारतीय समाज और संस्कृति" राजस्थान ग्रंथ अकादमी,जयपुर।
2. करलिंगर, एफ.एम. 1964 "फाउन्डेशन ऑफ व्हेवियर रिसर्च" (हाल्ट)
3. मित्र, कैलाश 1995 "आओं गाँव चलें" जयपुर राजस्थान पत्रिका प्रकाशन
4. लाल, बिहारी (1998). खेल-प्रशिक्षण,अग्रवाल पब्लिकेशन्स,पटना।
5. डवेक एस डॉ. कैरोल,(2020), सफलता का नया मनोविज्ञान मंजुल पब्लिशिंग हाउस,भोपाल।
6. पाण्डेय, इन्द्र मोहन (2017). माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अधिगम शैली तथा उनके मानसिक स्वास्थ्य में सम्बन्ध का एक अध्ययन, अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, राजा हरपाल सिंह पी०जी० कालेज, सिंगरामऊ, जौनपुर, सम्बद्ध पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
7. पुवा, पोह क्योंग एवं अन्य (2015). द रिलेशनशिप बिटविन मेन्टल हेल्थ एण्ड ऐकेडमी एचिवमेन्ट एमंग यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट ए लिट्रेचर रिव्यू, ग्लोबल इलूमिनिस्ट्रेटर पब्लिशिंग, मल्टीडिसिपिलनरी स्टडि
8. बन्दना एवं शर्मा, दर्शन, पी. (2012), होम इन्वार्मेन्ट, मेन्टल हेल्थ एण्ड ऐकेडमी एचिवमेन्ट एमंग हायर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स,इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ सांइस एण्ड रिर्सच पब्लिकेशन,वाल्यूम-2
9. मिश्र ब्रजकुमार, (2010), मानव व्यवहार का अध्ययन।

की-वर्ड- पारिवारिक वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य व संवेगात्मक विकास।